आवाहनं न जानामि (क्षमा प्रार्थना)

इन पाठों के बारे में

स्रोत	हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।
लिप्यन्तरण	रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

आवाहनं न जानामि (क्षमा प्रार्थना)

प्रकार	प्रार्थना
संस्करण	प्रचलित पाठ
परम्परा	अनेक परम्पराओं में प्रचलित
स्रोत	पारम्परिक भक्ति पाठ (प्रचलित मुद्रित एवं मौखिक रूप) — Traditional verses printed at the close of many puja books
आभार	पारम्परिक; सार्वजनिक।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।

āvāhanaṃ na jānāmi na jānāmi visarjanam |

पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥

pūjāṃ caiva na jānāmi kṣamasva parameśvara ||

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।

mantrahīnaṃ kriyāhīnaṃ bhaktihīnaṃ sureśvara |

यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

yatpūjitaṃ mayā deva paripūrṇaṃ tadastu me ||

अर्थ

मैं न आवाहन जानता हूँ, न विसर्जन, न पूजा की विधि — हे परमेश्वर, क्षमा करें। हे सुरेश्वर, मन्त्र, क्रिया और भक्ति से रहित जो भी पूजा मैंने की है, वह पूर्ण हो।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।